

डॉ. अगस्त कोकेल, क्रॉनिकल्स, सत्र 13, सुलैमान, मंदिर निर्माता

© 2024 गस कोकेल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. ऑगस्ट कोकेल द्वारा इतिहास की पुस्तकों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 13 है, सुलैमान, मंदिर निर्माता।

हमने अपना पिछला सत्र डेविड द्वारा इस्राएल की सभा को यह आदेश दिए जाने के साथ समाप्त किया कि उन्हें मंदिर निर्माण के प्रयास में सुलैमान का समर्थन करना चाहिए।

तो, आज हम सुलैमान के शासनकाल के साथ आगे बढ़ते हैं। इतिहासकार के अनुसार, सुलैमान के शासनकाल के साथ एक नया युग शुरू होता है। यह अध्याय 28 में दाऊद के भाषण में पहले से ही स्पष्ट है।

डेविड कहते हैं कि भगवान ने सुलैमान को मेरे सिंहासन का उत्तराधिकारी नियुक्त किया है, और वह इसे हिब्रू शब्द शालोम से जोड़ते हैं। यह एक ऐसा शब्द हो सकता है जिससे आप परिचित हों, लेकिन हिब्रू लोग इस शब्द का इस्तेमाल कई अलग-अलग तरीकों से करते हैं। लेकिन मूल रूप से, इसका अर्थ काफी व्यापक अर्थ में शांति है।

इसलिए, सुलैमान के साथ, इतिहासकार एक नए युग की शुरुआत देखता है। यह शांति और आराम का भयानक युग है। दाऊद मंदिर बनाने के योग्य नहीं है क्योंकि वह युद्ध का आदमी था और उसने बहुत खून बहाया था।

अब, यह दिलचस्प है कि इतिहासकार, अनिवार्य रूप से, दाऊद के साम्राज्य के विस्तार को स्वीकार करता है, जो कि एक आक्रामक युद्ध है। इसलिए, हालाँकि अम्मोनियों और अरामियों ने इज़राइल पर हमला किया था, दाऊद ने उन्हें जीतकर, अपने क्षेत्र का नियंत्रण अराम के क्षेत्र तक और अम्मोन और मोआब और एदोम और फिलिस्तिन के चारों ओर फैला दिया। तो वह दाऊद का साम्राज्य बन गया, और उसने उस साम्राज्य को विजय और युद्ध के द्वारा हासिल किया।

इतिहासकार ने स्पष्ट रूप से संकेत दिया है कि इसमें एक नैतिक मुद्दा है। दाऊद एक ऐसा व्यक्ति है जिसने बहुत खून बहाया है और इसलिए वह मंदिर बनाने के योग्य नहीं है। लेकिन अब हमारे पास सुलैमान है, और उसका नाम हमें शांति की याद दिलाता है। वह अब परमेश्वर के विश्राम का प्रतिनिधित्व करता है, और फिर वह वह है जो मंदिर बनाने के योग्य हो जाता है, जो परमेश्वर के शासन का प्रतीक है।

तो, इतिहास की हमारी रूपरेखा में, हम एक बिल्कुल नए खंड की ओर बढ़ते हैं। इतिहास के पहले खंड में राष्ट्र की पहचान और फिर राज्य की स्थापना और मंदिर की तैयारियों के बारे में बताया गया था। अब, हम मंदिर पर आते हैं, और इसकी शुरुआत सुलैमान के शासनकाल से होती है।

तो, इतिहास में अगला बड़ा खंड, अध्याय 9 के अंत तक, सुलैमान, मंदिर के निर्माण और उसके शासनकाल की भव्यता से निपटने वाला है। इतिहास में, सुलैमान शांति का आदमी है। सुलैमान एक ऐसा व्यक्ति है जो हर तरह से, परमेश्वर के राज्य के आदर्शों का प्रतिनिधित्व करता है।

हम सुलैमान की कुछ असफलताओं के बारे में कुछ नहीं सुनते, जो हमें राजाओं में मिलती हैं। यह वह हिस्सा नहीं है जिस पर इतिहासकार ध्यान केंद्रित करना चाहता है। इसके बजाय, वह चाहता है कि हम परमेश्वर की योजना और उसके अपने राज्य के लिए परमेश्वर के इरादे को देखें।

जब हम इन पूरे पहले नौ अध्यायों को देखते हैं, तो हमें तुरंत यह एहसास नहीं होता कि वास्तव में इनमें कोई संरचना है। हम इसे कभी-कभी चियास्टिक प्रकार की संरचना या पैलिस्ट्रोफ-प्रकार की संरचना कहते हैं, जिसमें जिस बिंदु से आप शुरू करते हैं, वही बिंदु होता है जिस पर आप समाप्त भी होते हैं। और आप मुख्य बिंदु की ओर बढ़ते हैं और फिर वापस आते समय विषय को दोहराते हैं।

यह ऐसी संरचना है जिस पर हम समय-समय पर ध्यान देंगे। हम इसे डेविड के इतिहासकार की प्रस्तुति में पहले ही देख चुके हैं। हो सकता है कि यह वास्तव में एक स्मरणीय उपकरण था, यह सामग्री, विषय-वस्तु को याद रखने और यह पहचानने का एक तरीका है कि यह कहाँ है।

लेकिन हमारे पास सुलैमान है, सुलैमान से शुरू करते हुए। वह एक ऐसा व्यक्ति है जो प्रभु की तलाश करता है, और हमने पहले ही इतिहासकार की योजना में तलाश शब्द के महत्व को इंगित किया है। फिर हमारे पास गिबोन में दर्शन है, जहाँ सुलैमान को बुद्धि का उपहार दिया जाता है, जो सुलैमान की शक्ति, धन और प्रभाव के बारे में एक कथन है।

फिर, मुख्य बिंदु, और हम देख सकते हैं कि यह सुलैमान के बारे में लगभग हर चीज़ को शामिल करता है, मंदिर का निर्माण। और फिर, हम सुलैमान के महान व्यापार और धन के बारे में और अधिक सुनते हैं। हम अरब के क्षेत्र से शेबा की रानी की यात्रा के साथ उसकी अंतरराष्ट्रीय कुख्याति देखते हैं, और फिर सुलैमान की बुद्धि और उसके धन का समापन।

तो कमोबेश यही वह संरचना है जिसका इतिहासकार अपने सुलैमान को प्रस्तुत करने के लिए उपयोग करता है। वह मंदिर के निर्माण को प्रस्तुत करने के लिए भी इसी तरह की संरचना का उपयोग करता है। इसलिए, हम अध्याय 2 में श्रम और सामग्री के प्रावधान से शुरू करते हैं। संरचना और उसके सामान उसे दाऊद ने दिए थे।

मंदिर का समर्पण, लोगों का समर्पण। यहाँ मंदिर का पवित्रीकरण और उसके कार्य की याद दिलाई गई है, जहाँ हमें अवज्ञा, उस वाचा के प्रति विश्वासघात के बारे में कुछ चेतावनियाँ मिलती हैं जो हमने पहले की थी। और फिर वापस उस तरीके पर आते हैं जिसमें सुलैमान के लिए सामग्री और बाकी सब कुछ प्रदान किया गया था।

तो, हम यहाँ मंदिर की तैयारियों से शुरू करते हैं। इनमें से एक और घटना वह है जहाँ हम अध्याय 2, श्लोक 2 में श्रम शक्ति की भर्ती देखते हैं। 2:3 से 10 में सोलोमन का हीराम को पत्र। सोलोमन को हीराम का जवाब और फिर श्रम शक्ति अध्याय 2 में हैं। तो यहाँ हमारे पास मंदिर

की संरचना और उसके साज-सामान हैं जो हमें अध्याय 3, श्लोक 1 से अध्याय 5, श्लोक 1 में दिए गए हैं। हमारे पास मंदिर की स्थापना है, जहाँ इतिहासकार हमें कुछ ऐसी जानकारी देता है जो उसके लिए अद्वितीय है।

यहाँ वह उत्पत्ति और अब्राहम की कहानी और अपने इकलौते बेटे इसहाक को यहोवा को उपहार के रूप में देने की परीक्षा की कहानी तक वापस जाता है। और यह मोरिया पर्वत पर घटित होता है। अब, मोरिया पर्वत का वास्तविक भूगोल और स्थान उत्पत्ति में स्वयं-स्पष्ट नहीं है, लेकिन इतिहासकार उस पर्वत की पहचान उसी पर्वत से करते हैं जिसे दाऊद ने खलिहान में मंदिर स्थल के लिए नामित किया था जहाँ प्लेग को रोका गया था।

और इसलिए, मंदिर उस पहाड़ पर बनाया जाएगा। हम समझ सकते हैं कि क्यों, परंपरा में, यह आधुनिक समय में यहूदी धर्म और यहूदी पृष्ठभूमि के सभी लोगों के लिए एक बहुत ही वांछित और पवित्र पहाड़ी बन गई है। बेशक, जैसा कि हम अच्छी तरह से जानते हैं, इसे मुसलमानों ने अपने कब्जे में ले लिया और उन्होंने उस पहाड़ी की चोटी पर अपना खुद का मंदिर बना लिया, जिसके परिणामस्वरूप दोनों समूहों के बीच लगातार संघर्ष हुआ, खासकर वेलिंग वॉल के साथ, जहाँ यहूदी लोगों को अभी भी प्रार्थना करने की अनुमति है।

विलाप करने वाली दीवार मूलतः मंदिर की कुछ नींवों का अवशेष है जिसे हेरोदेस ने बनवाया था। इसलिए, यह मोरिया पर्वत के सबसे करीब है, जैसा कि इतिहासकार इसे यहाँ कहते हैं। फिर हमारे पास मंदिर की पूरी संरचना है जो हमें 3 श्लोक 3 से 7 में दी गई है और मंदिर की साज-सज्जा, जो अध्याय 3 और 4 में है। इसलिए, यहाँ मैं मंदिर की संरचना और इसके कार्य के बारे में थोड़ी बात करने के लिए एक और पावरपॉइंट पर जाना चाहता हूँ, साथ ही जिस तरह से डेविड ने इसे सुलैमान को दिया था।

ऐसा करने के लिए, मैं निर्गमन की पुस्तक पर वापस जा रहा हूँ क्योंकि सुलैमान का मंदिर वास्तव में तम्बू की तर्ज पर डिज़ाइन और मॉडल किया गया है। यह सभी एक ही आयाम है। इसमें सभी समान संरचनाएँ और प्रतीकात्मकता की विशेषताएँ हैं।

यह बस थोड़ा बड़ा है। अब, मंदिर निर्माण के रोमन मानकों के अनुसार, मंदिर अभी भी एक छोटी सी जगह थी, लेकिन यह निश्चित रूप से बहुत बड़ी थी, यह तम्बू के आकार से दोगुनी थी। तो, यह तम्बू की आवश्यक संरचना है, जिस तरह से यह जंगल में थी, और सुलैमान के मंदिर को इसी तर्ज पर डिज़ाइन किया गया है।

तो, बाहर की तरफ, आपके पास तम्बू में प्रांगण है। यह एक दीवार वाला पर्दा था। लेकिन बेशक, सुलैमान के निर्माण में, यह सब एक दीवार का बाहरी प्रांगण बन गया।

और फिर उस प्रांगण के भीतर, बिल्कुल सममित तरीके से स्थित, इमारत खुद थी। तो, यह पूर्ण का प्रतिनिधित्व करता है। दुर्भाग्य से, इस स्लाइड पर दक्षिण और उत्तर को उलट दिया जाना चाहिए।

यह पूर्व दिशा को दर्शाता है। और भवन का पूर्वी भाग स्वयं प्रांगण के केंद्र में था। तम्बू के मामले में, हमारे पास भवन था, जो तम्बू के मामले में पोर्टेबल और चलने योग्य था, जो 30 हाथ का था।

तो, तम्बू के पीछे सबसे पवित्र स्थान, जहाँ परमेश्वर का सिंहासन था, ठीक 10 हाथ गुणा 10 हाथ गुणा 10 हाथ था। सुलैमान के मंदिर में, यह दोगुना है। तो यह 20 हाथ गुणा 20 हाथ गुणा 20 हाथ हो जाता है।

और यह 20 हाथ की जगह 40 हाथ है। पर्दे के सामने धूप की वेदी है, जो परमेश्वर की उपस्थिति को दर्शाती है, जो पर्दे के पीछे है। और, बेशक, धूप न केवल हर दिन सभी को परमेश्वर की उपस्थिति की याद दिलाने के लिए बनाई जाती है, बल्कि खासकर जब हमारे पास प्रायश्चित का दिन होता है। वेदी पर डाली जाने वाली धूप सबसे पवित्र स्थान की महिमा से सुरक्षा है।

तो, पुजारी सुरक्षित है। फिर हमारे पास रोटी की मेज़ है, जो उसकी सृष्टि में परमेश्वर के प्रावधान को दर्शाती है। और हमारे पास मेनोराह, या शाखायुक्त मोमबत्ती है, जो प्रकाश देती थी।

तो, जैसा कि हम देखेंगे, खास तौर पर हमारे अगले प्रस्तुतिकरणों में, यह सब सृष्टि को दर्शाने के लिए है। इसका मतलब यह है कि ईश्वर अपनी सृष्टि में मौजूद है, लेकिन वास्तव में वहाँ उसकी कोई भौतिक उपस्थिति नहीं है। बल्कि, वह पवित्र है।

पवित्रता बस एक और आयाम है। पवित्रता एक ऐसा आयाम है जो केवल उन आयामों से बंधा नहीं है जिन्हें हम जानते हैं, समय और स्थान। हम हर चीज़ को स्थान के संदर्भ में मापते हैं क्योंकि हम भौतिक प्राणी हैं।

हम एक भौतिक दुनिया में रहते हैं। इसलिए, हम न केवल पृथ्वी को अंतरिक्ष के संदर्भ में मापते हैं, बल्कि हम पृथ्वी से परे ग्रहों को भी अंतरिक्ष के संदर्भ में मापते हैं। ये वही शब्द हैं जिनका उपयोग हम पृथ्वी को मापने के लिए करते हैं।

यह एक तरह से विडंबना है कि हम पृथ्वी से परे अंतरिक्ष के बारे में बात करते समय ऐसा करते हैं। हम समय का उपयोग करते हैं। और समय एक ऐसी सीमा है जो पवित्रता से संबंधित नहीं है।

यह प्रासंगिक नहीं है। यह कोई प्रासंगिक आयाम नहीं है। और वास्तव में समय क्या है? खैर, उत्पत्ति 1, श्लोक 14 हमें बताता है कि समय क्या है।

यह कुछ ऐसा है जो हमें भगवान ने उपहार के रूप में दिया है। भगवान ने सूर्य और चंद्रमा को जगह दी है, और वे प्रकाश देते हैं। लेकिन इसके द्वारा, हम मौसम और घंटों को मापने में सक्षम हैं।

और मनुष्य के रूप में, हम समय के अनुसार जीने के लिए बाध्य हैं। हमारे लिए समय, सूर्य के चारों ओर पृथ्वी की परिक्रमा द्वारा एक वर्ष के संदर्भ में मापा जाता है, जिसे हम केवल सितारों को देखकर जानते हैं, जो हमारी पृथ्वी के संबंध में अपनी निश्चित स्थिति में रहते हैं। इसलिए, यह वास्तव में बहुत सापेक्ष है।

जिस तरह से हम अंतरिक्ष और समय के बारे में बात करते हैं वह पूरी तरह से इस बात से संबंधित है कि हम पृथ्वी पर किस तरह से काम करते हैं, यही एकमात्र तरीका है जिससे हम उन्हें कर सकते हैं। इस्राएलियों ने कहा कि एक और आयाम है। एक आयाम है जिसे पवित्र कहा जाता है।

और आयाम, जो कि ईश्वर का पवित्र क्षेत्र है, वह है जिसमें समय बनाया जाता है, जिसमें स्थान बनाया जाता है। इसलिए, समय और स्थान सुलैमान के मंदिर के इस हिस्से द्वारा दर्शाए गए हैं, लेकिन पवित्र पूरी तरह से अलग है। और जैसा कि हम देखेंगे, मंदिर के मामले में यह पवित्रता अंधकार द्वारा दर्शाई गई है, बस यह दिखाने के लिए कि यह एक और आयाम है जो प्रकाश पर निर्भर नहीं है, जिस तरह से पृथ्वी प्रकाश पर निर्भर है।

और यह एक और आयाम है जिसमें हम चीजों को समय के हिसाब से प्रकाश से नहीं मापते। यह सिर्फ अंधकार है। तो, यह एक बिल्कुल अलग क्षेत्र है।

यह निश्चित रूप से एक चित्र है, यह एक रूपक है, जो हमें यह समझने में मदद करने की कोशिश करता है कि हम पूरी तरह से ईश्वर पर निर्भर हैं। ईश्वर जिसे हम केवल मनुष्य के रूप में अपनी शारीरिक सीमाओं के संदर्भ में ही समझ सकते हैं। हम उसे केवल उसके व्यक्तित्व और उसके अस्तित्व के अर्थ में सापेक्ष रूप में ही समझ सकते हैं।

हम उसे, बेशक, सच में जान सकते हैं। हम सच में जान सकते हैं कि परमेश्वर क्या चाहता है और परमेश्वर हमसे क्या चाहता है। लेकिन मंदिर पवित्रता के बारे में निरंतर याद दिलाता है।

हमने पहले उज्जियाह की मृत्यु के बारे में बताया था। और यह सन्दूक का अध्ययन करने के सरल कार्य के लिए इतनी कठोर सजा थी क्योंकि प्रतीक जो सामान्य, पृथ्वी और सृष्टि के दायरे में पवित्रता का प्रतिनिधित्व करने जा रहे हैं, और इसी तरह, उन प्रतीकों को केवल इस पृथ्वी की विशेषताओं से संबंधित नहीं होना चाहिए। यह सन्दूक केवल एक और बक्सा नहीं है।

अब, हमारे पास बाहरी प्रांगण में कांस्य की एक बड़ी वेदी भी है जिस पर प्रसाद चढ़ाया जाता है। और फिर हमारे पास किंग्स में समुद्र कहा गया है। इतिहासकार इसका उल्लेख उस तरह से नहीं करते हैं।

ऐसा लगता है कि समुद्र का राजाओं में भी प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व है, क्योंकि यह उस क्रम का प्रतिनिधित्व करता है जिससे सृष्टि बनाई गई थी। समुद्र की पहचान उस चीज़ से की जाती है जो सृष्टि से पहले थी, चाहे वह कुछ भी हो। लेकिन इतिहास में, यह एक व्यावहारिक, व्यावहारिक कार्य है, जिसका संबंध बलिदानों के संबंध में शुद्धिकरण से है।

फिर, पवित्रता के आयाम इतिहास में निहित हैं, क्योंकि वह मंदिर के साज-सामान का विस्तार से वर्णन करता है। लेकिन सिंहासन कक्ष, जो सबसे पवित्र स्थान है, पूरी तरह से सोने से मढ़ा हुआ है। और सभी करूब सोने से मढ़े हुए हैं।

और फिर पवित्र स्थान है, और फिर प्रांगण है। तो, मंदिर के तीन स्तर हैं। पवित्र स्थान, ज़ाहिर है, केवल पुजारियों के लिए सुलभ है क्योंकि यह केवल पुजारी ही हैं जो सीमित लोगों और भगवान के बीच मध्यस्थ के रूप में काम कर सकते हैं।

प्राचीन काल में शासन को जिस तरह से दर्शाया जाता था, और इतिहासकार इसके बारे में बात करने जा रहे हैं, वह बाइबल में करूब के रूप में वर्णित है। ये मिश्रित प्राणी हैं: एक बैल और एक शेर, एक उकाब और एक मनुष्य। वे सभी क्षेत्रों पर एक प्रभुत्व का प्रतिनिधित्व करते प्रतीत होते हैं: पालतू जानवर, पशु वन्यजीव, पक्षी और मनुष्य।

ये करूब प्राचीन निकट पूर्व में परिचित हैं, क्योंकि इनका उपयोग हमेशा प्रभुत्व और शासन तथा सिंहासन को दर्शाने के लिए किया जाता है। और इसलिए हमें सोलोमन के मंदिर के इतिहासकार के वर्णन में भी इसी तरह की चीज़ मिलती है। अब, मैं वास्तव में ब्रिटिश संग्रहालय में इस विशेष प्राणी के पास खड़ा हूँ।

यह बहुत बड़ा है। इस जानवर के बारे में सोचकर मेरा सिर लगभग वहीं तक आ जाता है। इसे इराक से ब्रिटिश संग्रहालय में लाया गया था, ब्रिटिश साम्राज्य के दिनों में, जब वे दुनिया भर में हर चीज़ को अपनी इच्छानुसार ले जाते थे।

लेकिन आप यहाँ चील के पंख, बैल के पैर और बैल का शरीर देख सकते हैं, मैं कहूँगा कि बैल का शरीर और बैल के पैर, शेर के पैर और फिर, ज़ाहिर है, व्यक्ति का सिर। और ये अशर्बनिपाल के महल में खड़े थे। लेकिन यह फिलिस्तीन में आम तौर पर जाना जाता था।

यह एक शिलालेख है जो फिलिस्तीन से आया है। लेकिन यहाँ एक सिंहासन है जो मेगिडो से आया है। और आप देख सकते हैं कि सिंहासन को कैसे डिज़ाइन और दर्शाया गया था।

और इतिहास में वर्णन हमें यह सुझाव देता है कि यह वह विचार है जो उस तरीके के पीछे था जिसमें परम पवित्र स्थान में करूबों द्वारा परमेश्वर के शासन का प्रतिनिधित्व किया जाना था। परम पवित्र स्थान में करूब बहुत बड़े हैं। पवित्र स्थान की चौड़ाई 20 हाथ है।

और करूबों की नोकें दीवार के दोनों ओर छूती हैं। इसलिए वे बिल्कुल विशाल हैं। यहाँ एक सामान्य मानव सिंहासन है।

यहाँ आपके पास पावदान है, जो मंदिर के सबसे पवित्र स्थान में, संदूक द्वारा दर्शाया जाएगा। संदूक के अंदर वाचा है। वाचा मनुष्य और परमेश्वर के बीच के रिश्ते को दर्शाती है।

इसमें 10 शब्द हैं, जिन्हें हम अक्सर 10 आज्ञाएँ कहते हैं। लेकिन वे वास्तव में आज्ञाओं से कहीं ज़्यादा हैं। वे उन मूल्यों को बताते हैं जो जीवन और परिवार के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

और परमेश्वर की पवित्रता की मान्यता। यहाँ, आप सिंहासन के किनारों, बाज के पंखों को बनते हुए देखते हैं। यहाँ आप सिंहासन कुर्सी के सामने आदमी का सिर देखते हैं।

और यहाँ शेर का शरीर है। इस मामले में, यह शरीर ही शेर है। और खुर बैल हैं।

लेकिन आपके पास अभी भी वही चार प्राणी हैं: बैल, शेर, पंख और मनुष्य। और फिर, बेशक, राजा खुद सिंहासन पर बैठा है।

तो, इस तरह की छवि सुलैमान के दिनों में जानी जाती थी। और इसमें कोई संदेह नहीं है कि इतिहासकार के दिनों में भी यह जानी जाती है जब वह सुलैमान के मंदिर का वर्णन करता है। हालाँकि, इतिहासकार सुलैमान के मंदिर को अपनाता है और सुलैमान के मंदिर का वर्णन उसी तरह करता है जैसा उसने अपने धर्मग्रंथों में पाया था।

जैसा कि उसने राजाओं की पुस्तक में पाया। एक और करूब का चित्र। जैसा कि हम देख सकते हैं, ये शिलालेख विभिन्न प्रकार के रूपों में आते हैं।

लेकिन यहाँ पांवदान, शेर का शरीर, बैल के पैर, इत्यादि हैं। चील के पंख। तो, सबसे पवित्र स्थान कुछ ऐसा ही रहा होगा।

सबसे पवित्र स्थान के बारे में अनोखी बात यह है कि वहाँ सिंहासन के लिए कोई सीट नहीं है। सिंहासन के लिए सीट की आवश्यकता नहीं है क्योंकि इस सबसे पवित्र स्थान में सभी करूब प्रभुत्व का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। वे परमेश्वर के प्रभुत्व का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

तो, करूब के पंख बीच में छूते हैं, और फिर वे दो दीवारों को छूते हैं। और हम वहाँ पांव रखने की चौकी देखते हैं, जो कि संदूक है, जो सबसे पवित्र स्थान के सामने स्थित है। और, बेशक, जैसा कि हम जानते हैं, संदूक का शीर्ष सोने से मढ़ा हुआ है।

इसे हिब्रू में कफ़ोडेट कहा जाता है। लेकिन कफ़र, या हिब्रू में प्रायश्चित्त करना, सिर्फ़ यह दिखाने का एक तरीका है, यह व्यक्त करने का कि वाचा के विरुद्ध अपराध, वाचा की विफलताएँ, यहाँ क्षमा के रूप में दर्शाई जा सकती हैं। इसलिए यही कारण है कि प्रायश्चित्त का एक दिन होता है जब कफ़ोडेट के ऊपर खून छिड़का जाता है।

पर्दा हटा दिया जाता है, धूप वेदी पर फेंकी जाती है, और कफ़ोडेट के ऊपर खून छिड़का जाता है। बेशक, अंदर पटियाएँ और करूब हैं, जो सबसे पवित्र स्थान के अंदर हैं। इसलिए यह ऐसा कुछ नहीं रहा होगा जिसे इतिहासकार के दिनों के लोगों ने वास्तव में कभी देखा होगा।

अब मंदिर का पुनर्निर्माण किया गया, इसे बहाल किया गया। दूसरे मंदिर काल में संदूक के बारे में हमें कुछ भी पता नहीं है। इसलिए जब मंदिर को बहाल किया गया था, तो वास्तव में इसकी प्रतिकृति क्या थी, हम नहीं जानते।

लेकिन इतिहासकार के लिए यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि यह सब कुछ जिसका प्रतीक है। उनके धर्मग्रंथों में, वे जानते थे कि जीवन रक्त में है। इसलिए, छुड़ौती, वह दंड जो जीवन देने वाले के खिलाफ वाचा के उल्लंघन के लिए चुकाया जा सकता है, रक्त द्वारा दर्शाया गया है।

और प्रायश्चित का दिन एक ऐसा तरीका है जिसमें पूरे लोग, इस्राएल के पूरे राष्ट्र के लिए, पुजारी द्वारा वेदी या कफोडेट के शीर्ष पर रक्त छिड़ककर प्रायश्चित किया जाता है। इसलिए जब इतिहासकार विभिन्न राजाओं और विभिन्न समयों के माध्यम से जाता है जब उसके दिनों में ये उत्सव मनाए जाते थे, तो ये अवधारणाएँ स्पष्ट होनी चाहिए। उन्हें इतिहास में स्पष्ट रूप से नहीं रखा गया है, और वास्तव में उन्हें कहीं भी स्पष्ट रूप से नहीं रखा गया है।

हम देखेंगे कि भजन संहिता में इनमें से कुछ बातों का और भी अधिक उल्लेख किया गया है। हालाँकि, यह मंदिर का प्रतीक है। और, बेशक, हमारे लिए ईसाइयों के रूप में, ये सभी प्रतीक यीशु मसीह के व्यक्तित्व में पूरे होते हैं, जैसा कि इब्रानियों के लेखक ने इंगित करने के लिए कष्ट उठाया है।

इसलिए, इब्रानियों के लेखक ने स्पष्ट किया है कि यीशु मेम्ना है। यीशु ही वह है जो मुक्ति देने वाला लहू प्रदान करता है। यीशु ही मंदिर है।

यीशु सबसे पवित्र स्थान है। यह कोई रूपक नहीं है। मंदिर कोई रूपक नहीं है, क्योंकि मंदिर का हर हिस्सा यीशु के किसी अलग पहलू को दर्शाता है।

बल्कि, यीशु स्वयं अपने व्यक्तित्व में, एक मानव के रूप में हम में से एक बनकर, उन सभी चीज़ों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनका मंदिर प्रतिनिधित्व करता था। इसीलिए यीशु यूहन्ना अध्याय 2 में कह सकते हैं, इस मंदिर को नष्ट कर दो, और तीन दिनों में मैं इसे खड़ा कर दूँगा। शिष्यों को समझ में आ गया कि मंदिर उनके शरीर का प्रतिनिधित्व कर रहा था।

और इसलिए, ईसाइयों के लिए, यीशु का शरीर किसी भी भौतिक प्रतिनिधित्व की आवश्यकता को विस्थापित करता है जो पिछले समय और इतिहासकार के दिनों में मौजूद था। इसलिए, जब हम इतिहास पढ़ते हैं, तो कुछ मायनों में, प्रायश्चित का महत्व और अर्थ, क्रूस पर यीशु के कार्य का महत्व और अर्थ, हमारे लिए एक ज्ञानोदय है। हमें यह समझने में मदद करने के लिए कि हम परम पवित्र परमेश्वर के साथ कैसे संबंध बना सकते हैं।

भले ही हम सीमित हैं, भले ही हम उसकी वाचा को उस तरह से निभाने में असफल हो जाते हैं जैसा हमें करना चाहिए, यह इस बात को दर्शाने का एक तरीका है कि परमेश्वर की दया कैसे काम कर सकती है। कैसे क्षमा हो सकती है और हमारी असफलताओं के बावजूद कैसे रिश्ता बना रह सकता है। मंदिर, जैसा कि हम इतिहास में पढ़ते हैं, केवल भव्यता की इमारत नहीं होनी चाहिए।

क्योंकि कई मायनों में, मानवीय दृष्टि से, प्राचीन अतीत की अन्य महान इमारतों की तुलना में, यह वास्तव में उतना महान नहीं था। यह एक शानदार इमारत थी। यह सोने से ढकी हुई थी।

पवित्र स्थान के अंदर हर जगह दीवारों पर करूब उकेरे गए थे, जैसा कि इतिहासकार कहते हैं, जीवन का पेड़ वहाँ था। यह पूरी सृष्टि का प्रतिनिधित्व करता था। यह एक शानदार जगह थी।

उस समय के इतिहासकारों के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण था। इसलिए, मंदिर का निर्माण होना ज़रूरी था, और उसका कार्य, पूजा-अर्चना, होना ज़रूरी था।

और इसके महत्व के प्रति उनका समर्पण इस बात में देखा जा सकता है कि यही हमारा जीवन है। इस दुनिया में हमारा जीवन परमेश्वर की उपस्थिति और महिमा को दर्शाने के लिए है। और हम ऐसा अपने समय के अनुसार करते हैं।

और इतिहासकार के समय में, यह जिस तरह से हुआ वह था अपने मंदिर में परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करना और उसके चारों ओर उसके लोगों का उनकी स्तुति करना। यही कारण है कि इतिहास की पुस्तक का इतना बड़ा हिस्सा मंदिर को समर्पित है और सुलैमान के जीवन का अधिकांश हिस्सा मंदिर को समर्पित है। यह डॉ. ऑगस्ट कुंकेल द्वारा इतिहास की पुस्तकों पर दी गई शिक्षा है।

यह डॉ. ऑगस्ट कुंकेल द्वारा इतिहास की पुस्तकों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 13 है, सुलैमान, मंदिर निर्माता।